



माँ सरस्वती कवचम्

इसे श्रद्धा और विश्वास के साथ करने से जीवन में सफलता, शांति और समृद्धि आती है।

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्रीसरस्वती कवचम् ॥

अस्य श्रीसरस्वतीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । श्रीसरस्वती देवता । ऐं बीजम् । ह्रीं शक्तिः । श्रीं
कीलकम् । मम सर्वविद्याप्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः ॥

ॐ श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा शिरो मे पातु सर्वतः ।
श्री वाग्देवता ललाटं मे पातु निरन्तरम् ॥
ॐ ऐं सरस्वत्यै स्वाहा नेत्रे मे सर्वदा अवतु ।
ह्रीं वाग्वादिन्यै स्वाहा कर्णौ मे पातु नित्यशः ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं सरस्वत्यै स्वाहा नासां मे सर्वतोऽवतु ।
ॐ ऐं ह्रीं वद वद जिह्वां मे पातु सर्वदा ॥
ॐ ह्रीं विद्याधिष्ठातृदेव्यै स्वाहा दन्तान् मेऽवतु नित्यशः ।
ॐ श्रीं ह्रीं कण्ठवासिन्यै स्वाहा ग्रीवां मे पातु सर्वदा ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विद्यरूपायै स्वाहा वक्षः मे सदावतु ।
ॐ ह्रीं हृदयवासिन्यै स्वाहा हृदयं मे सदावतु ॥
ॐ श्रीं ह्रीं बाहुपुजितायै स्वाहा बाहू मे पातु सर्वदा ।
ॐ ऐं करकमलधारिण्यै स्वाहा हस्तौ मे पातु नित्यशः ॥
ॐ ह्रीं पद्मासिन्यै स्वाहा नाभिं मे पातु सर्वदा ।
ॐ श्रीं कटिरक्षिण्यै स्वाहा कटिं मे पातु नित्यशः ॥
ॐ ऐं ऊरुदेवत्यै स्वाहा ऊरू मे पातु सर्वदा ।
ॐ ह्रीं जानुरक्षिण्यै स्वाहा जानुनी मे सदावतु ॥
ॐ श्रीं जङ्घाधारिण्यै स्वाहा जङ्घे मे पातु सर्वदा ।
ॐ ऐं पाद्मालयायै स्वाहा पादौ मे पातु नित्यशः ॥
ॐ वागीश्वर्यै विद्महे
वीणापाण्यै धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

॥इति श्रीसरस्वतीकवचम् सम्पूर्णम् ॥

❀ END ❀